B.A. (Hons) Part I
Philosophy - Paper - I
Topic - महात्मा बुद्ध का चतुर्थ आर्य सत्य'
Dr. Sachidanand Prasad.
R.R.S. College, Mokama.

अपने तृतीय आर्य सत्य में महात्मा बुद्ध ने यह बतलाया कि मानव जीवन का अंतिम उद्देश्य 'निर्वाण' की प्राप्ति करना है। क्योंकि निर्वाण की स्थिति प्राप्त हो जाने पर व्यक्ति आवागमन के भवचक्र से सदा के लिए मुक्त हो जाता है। बौद्ध दर्शन के चतुर्थ आर्य सत्य में निर्वाण प्राप्ति करने के लिए आठ मार्गों की चर्चा की गई है जिसे 'अष्टांगिक मार्ग' कहते हैं।

① सम्यक दृष्टि ② सम्यक संकल्प
③ सम्यक वाक् ④ सम्यक कर्मान्त
⑤ सम्यक आजीविका ⑥ सम्यक व्यायाम
⑦ सम्यक स्मृति ⑧ सम्यक समाधि

① सम्यक दृष्टि :- बौद्ध दर्शन के अनुसार वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप को जानना ही सम्यक दृष्टि कहलाता है। बौद्ध दर्शन के अनुसार दुःख का मूल कारण अविद्या है। अविद्या के कारण मनुष्य वस्तुओं के वास्तविक रूप को नहीं जान पाता है। बौद्ध दर्शन में बतलाया गया है कि सम्यक दृष्टि का अर्थ बौद्ध दर्शन का चतुर्थ

आर्य सत्यों का यथार्थ ज्ञान है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह बौद्ध दर्शन के चार आर्य सत्यों के बारे में जाने।

(2) सम्यक संकल्प :- बौद्ध दर्शन के अनुसार बुद्ध के चतुर्थ आर्य सत्यों को अपने जीवन में पालन करने के निश्चय को सम्यक संकल्प कहते है। कहने का अर्थ यह है कि केवल चार आर्य सत्य को जानना ही काफी नहीं है, बल्कि उसका अपने जीवन में पालन करना भी जरूरी है। मनुष्य को इन्द्रिय विषयों से अलग रखते हुए दूसरे के प्रति द्वेष एवं हिंसा के विचारों को त्यागकरने का संकल्प करना चाहिए।

(3) सम्यक वाक :- सम्यक वाक सम्यक संकल्प की अभिव्यक्ति है। बौद्ध दर्शन में कहा गया है कि कोई व्यक्ति सम्यक वाक का तभी पालन कर सकता है जब वह हमेशा सत्य एवं प्रिय वचन बोलता है। इसका सत्य एवं प्रिय वचन का अपने जीवन में प्रयोग करना सम्यकवाक

कहलाता है।

(4) सम्यक कर्मान्त :- बौद्ध दर्शन के अनुसार बुरे कर्मों का परित्याग करना सम्यक कर्मान्त कहलाता है। बौद्ध दर्शन में 3 प्रकार के बुरे कर्म है। (A) किसी जीव की हिंसा नहीं करना चाहिए (B) दूसरे की संपत्ति को नहीं चुराना चाहिए (C) इंद्रिय सुख का त्याग करना चाहिए।

(5) सम्यक आजीविका :- बौद्ध दर्शन के अनुसार जीवन निर्वाह के लिए उचित मार्ग का पालन करना चाहिए। धोखा, रिश्वत, लूट, हिंसा इत्यादि बुरे कर्मों के द्वारा मानव को अपना जीवन निर्वाह का साधन नहीं बनाना चाहिए

(6) सम्यक व्यायाम :- सम्यक व्यायाम का अर्थ यह है कि मन के अंदर जो बुरे विचार आ गये हैं उनको मन से बाहर निकालना चाहिए और मन में अच्छे विचारों को लाने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि मन कभी भी खाली नहीं रह सकता है।

(7) सम्यक स्मृति :- बौद्ध दर्शन में कहा गया है कि हमें अभी तक जिन विषयों का ज्ञान हो चुका है, उसे हमेशा याद रखना चाहिए। इसका सम्यक स्मृति का अर्थ वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप को जानते हुए उसके प्रति जागरूक रहना है। बौद्ध दर्शन में बतलाया गया है कि निर्वाण प्राप्त के इच्छुक व्यक्ति के लिए सम्यक स्मृति का पालन करना उसे समाधि के योग्य बना देता है।

(8) सम्यक समाधि :- बौद्ध दर्शन में बतलाया गया है कि उपरोक्त सात मार्गों पर चलने के बाद निर्वाण की इच्छा रखने वाला मनुष्य अपनी चित्तवृत्तियों का निरोध करके समाधि की अवस्था में पहुँचने के योग्य हो जाता है। समाधि की प्रथम अवस्था में साधक को चार आर्य सत्यों का चिन्तन एवं मनन करना पड़ता है। ध्यान की इसी अवस्था में आनन्द एवं शान्ति की अनुभूति

होती है परन्तु इस अवस्था में आनन्द एवं शान्ति की अनुभूति की चेतना रहती है। समाधि की तीसरी अवस्था में आनन्द एवं शान्ति की चेतना का अभाव रहता है। परन्तु शारीरिक आराम का ज्ञान रहता है। समाधि की चौथी अवस्था में शरीर के आराम एवं शान्ति का भाव भी नष्ट हो जाता है। इस अवस्था में चित्त-वृत्तियों का पूर्णतः निरोध हो जाता है। इस स्थिति को प्राप्त कर लेने के बाद सभी प्रकार के दुःखों का सदा के लिए नाश हो जाता है। ऐसे व्यक्ति को बौद्ध दर्शन में 'अर्हत' कहते है।